ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

जेंडर का मुद्दा संवेदनशीलता का : प्रो. आशा शुक्ला

इक्कीसवीं सदी महिलाओं की सदी है : प्रो. अखिलेश कुमार दुबे

वर्धा, 07 मार्च 2025 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, झूंसी प्रयागराज में स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा "विकसित भारत: महिलाओं की भूमिका, सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ" विषय पर शुक्रवार, 07 मार्च को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सम्मिश्र पद्धति से किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन तथा विश्वाविद्यालय के कुल गीत हुई। अतिथियों का स्वागत स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष डॉ. अवंतिका शुक्ला ने किया।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता बाबा साहेब अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने कहा कि विकसित महिला होने का प्रश्न गर्भ से ही शुरू हो जाता है। क्या हुआ है, लड़की या लड़का? महिलाओं की भूमिका को पुरुष बनाम महिला के

संदर्भ में देखने की बजाय जेंडर के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। जब तक हम महिला को उसके समग्र मानवीय स्वरूप में नहीं देखेंगे, तब तक सशक्तिकरण की बात अधूरी रहेगी। उन्होंने कहा कि जेंडर का मुद्दा संवेदनशीलता से जुड़ा हुआ है। विशिष्टवक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारतीय भाषा केंद्र की अध्यक्ष प्रो. बंदना झा ने वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं एवं ज्ञान परंपरा में महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सीता के संदर्भ कोजोड़ते हुए महिलाओं के संघर्ष और सामाजिक योगदान पर प्रकाश डाला।

नागपुर, महाराष्ट्र की स्त्री विमर्श की जानी-मानी लेखिका डॉ. सुशीला टाकभोरे ने स्त्री विमर्श बनाम पुरुष विमर्श की अवधारणा पर बात करते हुए कहा कि "मातृभूमि और मातृसत्ता के संदर्भ में घरेलू हिंसा, महिलाओं के पेशेवर जीवन (शिक्षिका, नर्स आदि के रूप में) और राजनीतिक सशक्तिकरण की आवश्यकता" पर जोर दिया। उन्होंने सवर्ण और दलित स्त्रियों के बीच आर्थिक चुनौतियों को रेखांकित करते हुए, विभिन्न धर्मों में महिलाओं की दोयम दर्जे की स्थिति पर गंभीर विमर्श किया।

कार्यक्रम की विशिष्ट वक्ता के रूप में जी.बी.पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान की डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि बौद्धिक हिंसा और 'ग्लास सीलिंग' (कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए अदृश्य बाधाएँ) की अवधारणा पर चर्चा की। उन्होंने महिलाओं के श्रम, स्त्रीत्व और मातृत्व की सामाजिक धारणाओं, डिजिटलीकरण और बाजार में महिला उपभोक्तावाद के प्रभावों का विश्लेषण किया। साथ ही, महिला सशक्तिकरण से जुड़ी सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता की भी समीक्षा की। राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन करते हुए संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. दिगंबर मा. तंगलवाड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि विकसित भारत की संकल्पना में महिलाओं की भूमिका और इतिहास पर प्रकाश डाला और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने पर जोर दिया। कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्र के अकादमिक निदेशक प्रो. अखिलेश कुमार दुबे ने कहा कि इक्कीसवीं शताब्दी महिलाओं कि शताब्दी" है। उन्होंने इस शताब्दी में महिलाओं के बढ़ते योगदान और उनकी बदलती सामाजिक-आर्थिक

स्थिति पर चर्चा की। संगोष्ठी का सफल संचालन स्त्री अध्ययन विभाग के पीएच.डी. शोधार्थी पवन कुमार उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. अमरेन्द्र शर्मा ऑनलाइन माध्यम से तथा डॉ. अख्तर आलम, डॉ. हरप्रीत कौर, डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी, डॉ. यशार्थ मंजुल, डॉ. सत्यवीर, डॉ. विजया सिंह, डॉ. अनूप कुमार, मनोज कुमार द्विवेदी, जयेन्द्र जायसवाल, सुभाष श्रीवास्तव, राहुल त्रिपाठी, प्रत्यूष शुक्ल, गीता देवी, देवमूर्ति द्विवेदी, जगजीवनराम प्रजापति, रोहित कुमार, पीतांबर गौतम, अभिषेक कुमार सहित केंद्र के सभी विद्यार्थी एवं शोधार्थी भौतिक रूप से अत्यधिक संख्या में उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष : स्त्री अध्ययन ने कार्यक्रम के अंत में सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।